रायसेन किला: रहस्यों की अनसुलझी दास्तान...

- राघवेन्द्र प्रताप सिंह
छात्र, एम.ए.जे.

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से 45 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह किला जिला मुख्यालय रायसेन में स्थित है, जिसे रायसेन किले के नाम से जाना जाता है। यह अपनी अनसुलझी पहेलियों के साथ लोगों कें कौतूहल और दन्तकथाओं की दास्तान बना हुआ है। हजार वर्षों में 15 से ज्यादा आक्रमण झेलने और इंसानी बेरुखी और अनदेखी का शिकार हुआ यह किला आज भी गौरव के साथ खड़ा हुआ है। यह प्राचीन काल के हमारे स्थापत्य कला और भवन निर्माण की समझ को दर्शाता है। अगर आप देश के सबसे चर्चित और रहस्यमय किलों की दास्तान को पढ़ें, तो यह किला अपना एक अलग स्थान रखता है।

ऐतिहासिक रूप से समृद्ध यह किला रणनीतिक एवं सामरिक महत्व रखता है। यह मध्यप्रदेश का एक प्रमुख आकर्षण है। 1200 ई. के आस पास निर्मित यह किला परमार राजवंश के साथ अन्य राजवंशों की गाथा को समेटे हुए है। रणनीतिक रूप से यह किला बहुत ही ज्यादा महत्वपूर्ण था, मालवा के प्रवेश द्वार के रूप में प्रसिद्ध इस किले ने संघर्ष और युद्ध का लंबा दौर देखा है। किले पर विभिन्न कालखंडों में 1223 ई. में इल्लतुतमिश, 1250 ई. में सुल्तान बलवन, 1283 ई. में जलालउद्दीन खिलजी, 1305 ई. में अलाउद्दीन खिलजी, 1315 ई. में मलिक काफूर, 1322 ई. में सुल्तान मोहम्मद शाह तुगलक, 1511 ई. में साहिब खान, 1532 ई. में हुमायू बादशाह, 1543 ई. में शेरशाह सूरी, 1554 ई. में सुल्तान बाजबहादुर, 1561 ई. में मुगल सम्राट अकबर, 1682 ई. में औरंगजेब, 1754 ई. में फैज मोहम्मद ने हमला किया था।

यह किला 10 वर्ग किलो मीटर के भूभाग में पहाड़ी की चोटी पर फैला हुआ है। बलुआ पत्थर से निर्मित यह किला प्राचीन वास्तुकला एवं गुणवत्ता का एक अद्भुत प्रमाण है जो इतनी शताब्दियाँ बीत जाने पर भी शान से खड़ा हुआ है।

किले के मध्य में ही मंदिर और मस्जिद दोनों का निर्माण कराया गया है, दुर्ग पर स्थित सोमेश्वर महादेव का मंदिर साल में एक बार ही महाशिवरात्रि पर खुलता है और इसी दिन मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें स्थानीय निवासी बड़े ही हर्षोल्लास के साथ सम्मिलित होते हैं। पुरातत्व विभाग के अधीन आने पर विभाग ने मंदिर को बंद कर दिया था, जिसे बाद में स्थानीय लोगों के अनुरोध के बाद महाशिवरात्रि पर खोलने का निर्णय लिया गया।

किले के मध्य में एक तालाब का निर्माण कराया गया है, जिसमें संपूर्ण किले का पानी नालियों के माध्यम से आकर जमा होता है, किले के नीचे नालियों का बिछा हुआ जाल आज तक समझ से परे है। यह उस समय की उन्नतशील वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम का उदाहरण है। किले में ही एक स्थान (इत्र दान महल) पर दो दीवारों का निर्माण इस प्रकार से किया गया है कि एक तरफ हल्का सा फुसफुसाने पर दूसरी तरफ स्पष्ट सुना जा सकता है। जबकि उनके मध्य की दूरी लगभग 20 फीट से अधिक है, जो कि तत्कालीन ईको साउंड सिस्टम का नायाब नमूना है।

किले पर सल्तनत काल से लेकर मुगल काल तक 15 से अधिक बार आक्रमण किये गये। सूरवंश के राजा शेर शाह सूरी ने किले के बाहर 4 माह तक घेरा डाल के रखा था, लेकिन फिर भी ना जीत सका। बाद में शेरशाह ने तांबे के सिक्कों को वहीं गलवा कर तोपों का निर्माण कराया और किले को जीता। उस समय राजा पूरनमल का वहां पर शासन था, उनको पता चलता है कि उनके साथ धोखा हुआ है, तो वो अपनी ही तलवार से अपनी रानी का सर धड़ से अलग कर देते हैं कि कोई उनको छू ना सके। किले में ही निर्मित एक कुंड में 700 से अधिक वीरांगनाओं ने आक्रांताओं से बचने के लिए जौहर कर लिया था।

किला अपने साथ एक लम्बा अतीत समेटे हुए है, एक बड़ी प्रचलित किंवदंती है कि राजा रायसेन के पास एक पारस पत्थर था। पारस पत्थर की विशेषता यह होती है कि किसी भी वस्तु में रगड़ने से वह वस्तु सोने में

परिवर्तित हो जाती है। एक बार युद्ध काल में राजा रायसेन ने उसे छिन जाने के डर से तालाब में फेंक दिया और किसी को उस जगह के विषय में नहीं बताया। स्थानीय निवासियों के अनुसार, उसके पश्चात बहुत सारे लोगों ने उसे ढूंढने का प्रयास किया लेकिन असफल रहे और सभी को अपनी जान गंवानी पड़ी। स्थानीय लोगों का कहना है कि उस पारस पत्थर की सुरक्षा एक जिन कर रहा है। बहरहाल भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ऐसी किसी भी संभावना को नकारता रहा है। लेकिन कहीं ना कहीं यह किला अपने आप में नायाब रहस्यों को छिपाये हुए है।

यह किला खोजी मनोवृत्ति के लोगों के लिए एक शानदार जगह हो सकती है।लाल बलुआ पत्थरों से तराशे गये किले का प्रकृति स्वयं श्रृंगार करती है, बारिश के समय बादलों का समूह आपका सहचर होकर आपके उत्साह को दोगुना करता है। सभी को एक बार इस अनसुलझी दास्तान से भरे किले का साक्षी बनना चाहिए।

(प्रस्तुति: मनुज फीचर सर्विस)

नोट: मनुज फीचर सर्विस में छपे लेखों के विचार लेखक के अपने हैं। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। यहां प्रकाशित सामग्री का उपयोग गैर व्यावसायिक कार्यों के लिए करने हेतु किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। मनुज फीचर सर्विस का उल्लेख अवश्य करें।